Chapter-6

षष्ठ परिच्छेद

पारिवारिक विघटन से टूटती सामाजिक स्थिति:

1. टूटते संयुक्त परिवार
2. कुंठित लघु परिवार
3. नारी स्वातन्त्र्य एवं अस्तित्व की भावना
4. पारिवारिक सम्बन्धों की स्थिति:-

(क) पति-पत्नी

(ख) माता-पिता और सन्तान

(ग) भाई-बहन तथा अन्य कौटुम्बिक सम्बन्धों का स्थिति

(घ) स्वच्छंद चेतना तथा टूटते-बनते परिवार

5. स्वच्छंद चेतना तथा टूटते बनते परिवार
6. विवाह तथा अन्य संस्कारों के प्रति नये चिन्तन
7. जातीय व्यवस्था से सामाजिक जीवन पर प्रभाव
8. टूटते सामाजिक रीति रिवाज

पारिवारिक विघटन से टूटती सामाजिक स्थिति:-

समकालीन युग में सामाजिक परम्पराओं तथा सामाजिक मान्यताओं को अब सन्देह की दृष्टि से देखा जाने लगा है, समकालीन नाटककारों ने विवाह, आदर्श समाचार जैसी सामाजिक मान्यताओं व संस्कारों की अवहेलना की है। और उसे नये ढंग से नई व्याख्या देकर सामाजिकों के सामने प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। प्रतीक नाटकों के पूर्व रचे जा रहे नाटकों में जो माता पिता के सामाजिक दायित्व पिता की आज्ञा, ब्रम्हचर्य आदि आश्रम व्यवस्था विवाह आदि अन्य संस्कारों के प्रति स्वीकारात्मक भाव विधवा तथा अन्तरजातीय विवाह आदि के प्रति जो निषेधात्मक भाव थे और जिसे समाज द्वारा मान्यता नहीं मिली थी, वह सब प्रतीक नाटकों में खुलकर चर्चा का विषय बन रहे हैं। समकालीन सामयिक राजनैतिक तथा सम्वैधानिक परिवेश में इन सामाजिक मान्यताओं के परिवर्तन में पर्याप्त सहयोग दे रहे हैं। आर्थिक संकट, आवास समस्या और पाश्चात्य सभ्यता ने प्राचीन सामाजिक व्यवस्था को आधुनिकता के रंग में रंग दिया आज के नाटककार विवश, कुंठित, द्वन्दात्मक, मन:स्थिति लिये आज के व्यक्ति की टूटी हुई स्थितियों खण्डित मन:स्थितियों को अभिव्यक्ति प्रदान कर रहे हैं।

रातरानी कर्फ्यू, न धर्म न ईमान, अत: किम्‌ अस्तर उर्वशी ओह अमेरिका, पीली दोपहर, माटी जागे रे, द्रौपदी, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण कुत्ते आदि ऐसे प्रमुख नाटक है जो समसामयिक परिवेश में खण्डित हो रही सामाजिक मान्यताओं को चित्रित कर रहे हैं। अत: किम नाटक में ईमानदार और कर्त्तव्यनिष्ट मनोहर घर का खर्च नहीं चला पाता। आर्थिक संकट के कारण उसका सीमित आय से पत्नी बच्चो

तथा उसके भाई की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती जबकि उसका चचेरा भाई वीरेन तस्करी द्वारा लाखों रुपये कमाता है, भोग विलासमें लिप्त रहताहै । इतना ही नहीं, वह धन के बल पर सरकारी अफसरोंकी ईमानदारीतथा देश के कानून तक को खरीदकर अपनी मुट्ठी में रखता है । इस व्यवस्था को देखकर मनोहरकुंठित और विद्रोही हो उठता है उसे कर्तव्य निष्ठता, ईमानदारी संस्कार यहाँ तक कि ईश्वर के प्रति भी अनास्था- उत्पन्न हो जाती है वह विवश होकर कह उठता है कि बहुत भरोसा किया मिला क्या? मिला ईश्वर के नाम पर पत्थर का टुकड़ा, मिली मिट्टी की मूर्ति, मिला दीवाल या कागज पर खींचा गया चित्र । एक पक्षी, एक मछली, एक साँप ईश्वर से बड़ा झूठ और नहीं रत्ना, 1." सूर्य कीअन्तिम किरण से सूर्य की पहलीकिरण तक" नाटक की शीलवती विद्रोही बनकर सामाजिक- परम्पराओं को नकारती है । 2. कथा " तलहटी की छाँह" 3.समझती है कुत्ते नाटक में मि० कपूर राका से कहताहै कि अब पुरानी परम्परायें टूटनी ही चाहिए । ------यह भी कोई बात है कि जिससे शादी हुई बस उसी से बँधे रह गये, समय के साथ साथ सब कुछ बदलते रहना चाहिए" 7.कर्फ्यू भी सामाजिक बन्धनों से लगे कर्फ्यू से व्यक्ति को मुक्त कर उसे सहज बनाने की प्रक्रिया से गुजरता है ।

1. टूटते संयुक्त परिवार:-

स्वतन्त्रता पूर्व विभिन्न सामाजिक सांस्कृति आन्दोलनों तथा स्वतन्त्र भारत के विभिन्न सम्वैधानिक अधिकारों आधुनिक शिक्षा प्रणाली तथा अन्य परिस्थितियों ने समाज विकृत दायरें में पनपने के अवसर प्रदान किये ।

और विकसित समाजमें सामाजिक परम्पराओं तथा पारिवारिक सम्बन्धों को अर्थ व सैक्स के आधार पर प्रभावित किया । अनेक अन्तर्विरोध

परिस्थितियों से या शनै: शनै: संकीर्णता के घेरे में सिमटने लगी । अहम् तथा स्वार्थता का समावेश होने से सामाजिक राजनैतिक तथा आर्थिक मूल्य ह्रासोन्मुख होते गये फलत: सामाजिक रीति रिवाज परम्परागत मूल्यों सभ्यता, संस्कृति, शिष्टाचार आदि में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा । व्यक्ति सामाजिकता के दायरों से कटकर अपने दायरों को विस्तृत करने में संलग्न हो गया । इस प्रकार समाज आदि अनेक छोटे मोटे दायरों में विभक्त हो गया ।

प्राचीन काल में संयुक्त परिवार के अन्तर्गत माता-पिता चाचा ताऊ, भाई-बहन, बहू-देवर तथा अन्य सम्बन्धी सम्मिलित होकर रहते थे । घर का बड़ा बूढ़ा गृह स्वामी होता था । और सभी सदस्य आज्ञा का पालन करते हुए अपने अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करतेथे । किन्तु सम-कालीन समाज में व्यक्तिवादी भावना के विकसित होने से संयुक्त परिवार की प्रतिष्ठा टूटती जा रही है जिसके मूल में आर्थिक विषमता शिक्षा तथा औद्योगीकरण हैं । आर्थिक दबाव में समाज व परिवार के भावनात्मक सम्बन्धों को आघात पहुँचाया है ।

2· कुंठित लघु परिवार:-

आधुनिक परिवेश में पारिवारिक सम्बन्धों की अर्थहीनता तनाव तथा जीवन कीकुंठा को उत्तर उर्वशी, "हमीदुल्लाह न धर्म न ईमान" अधूरी आवाज, चारपाई, द्रौपदी, आधे-अधूरे, एक और अजनबी आदि नाटकों में चित्रित किया गया है । इनके अतिरिक्त " परिवार के शत्रु तथा वर्फ की मीनार" जैसे नाटकों में भाई-बहन के भाव शून्य सम्बन्धों को उद्घाटित किया गया है ।

आधुनिक परिवेश में दम तोड़ते हुए संयुक्त परिवार का चित्रण नींव

की दरार नाटक में बखूबी से किया गया है आधुनिक परिवार इस प्रकार टूटन घटन तथा रिश्तों के खोखलेपन से ग्रस्त होता चला जा रहा है। शिक्षित पुत्र स्वतन्त्रता की भावना से प्रेरित होकर सम्पत्ति पर अधिकार प्राप्त करने की उत्कंठा से तथा वौद्धिकता के आधार पर परम्परागत रूढ़ियों से मुक्ति की भावना के कारण परिवार मे कलह का वातावरण बना देती है, जिससे परिवार में बंटवारे की नौबत आ जाती है। ४ रेवती शरण कृत, "न धर्म न ईमान" नाटक में वैवाहिक रूढ़ियों पर प्रश्नचिन्ह तो लगाया ही है, साथ ही संघर्ष की स्थिति में पारिवारिक विघटन को भी चित्रित किया है। नायक दिनेश दूर के सम्बन्ध की बहन दया से विवाह करने का इच्छुक है, किन्तु दादी द्वारा विरोध किये जाने पर घर त्याग कर चला जाता है। 5. डा. लक्ष्मीनारायण लाल के मादा कैक्टस नाटक में सुजाता नारी गरिमा से पूर्ण प्रख्यात चित्रकार अरबिन्द की-विवाहिता पत्नी है, सुजाता नाटककार के दिये गये प्रतीक के अनुसार मादा कैक्टस का प्रतीक है जो हर परिस्थितियों में हरी भरी रहती है और आधुनिक इन्सानों की प्रतीक है अपने पास नर कैक्टस को पाकर वह उसे सुखा देती है, इसलिए नर कैक्टस सुजाता का पति अरविन्द सूखने के डर से उससे दूर भागता है। वहीं पर आनन्दा आधुनिक शिक्षा प्राप्त नारी है, वह अपने सहचर्य मित्र अरबिन्द के कला की प्रेरणा है। अरविन्द के समान वह भी सामाजिक मान्यताओं और पति-पत्नी की आदर्श परम्परा को बच्चों का घरौंदा मानती है। इसी प्रकार बिना दीवार के घर की नायिका शोभा पति के न चाहते हुए पर पुरुष जयन्त की सहायता से उच्च पद पर पहुँच जाती है। 6. इस नाटक में पति के साथ तनावपूर्ण सम्बन्धों मे उसके घुटन का परिचय मिलता है, मोहन राकेश के आधे-अधूरे नाटक में तीन स्त्री पात्र हैं। नाटक की नायिका सावित्री अतृप्त और अभाव की

जिन्दगी जीती हुई निकम्मे पति बेकार बेटेबत्तमीज और शैतान बेटियों को झेलती हुई अपनी कमाई से पूरे परिवार का भरण करती है । प्रस्तुत नाटक में आधुनिक परिवारों में सावित्री जैसा जीवन जीने वाली खण्डित मन:स्थितियों वाली स्त्रियों को जीवन की व्याख्या प्रस्तुत करने का एक सफल प्रयास किया गया है । उसकी बड़ी लड़की स्वयं अपनी माँ से कहती है, "मैं घर से ही अपने साथ कुछ ऐसी चीज लेकर गयी हूँ जो किसी भी स्थिति में मुझे स्वाभाविक नहीं रहने देती । डा. लाल का नाटक करर्फ्यू की नायिका मनीषा आधुनिक महिलाओं के उस वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जो भावना के स्तर पर पारस्परिक संस्कारगत बन्धन को बोझ समझती है, और इन बन्धन को उतार फेंकती है । वह सुखी सौम्य सम्पन्न लगने वाले गौतम के सामाजिक करर्फ्यू को तोड़कर शहर के करर्फ्यू में पुलिस के हाथ पकड़कर अपने ऊपर सामूहिक बलात्कार झेलती है । और पुन: गौतम के पास लौटकर कहती है " जागो आँखे खोलो" मेरे साथ मनमानी करो मैं कुछ नहीं करती हूँ । भागूंगी भी नहीं भागना आसान नहीं । भागकर कोई जायेगा कहाँ । 8. इसी प्रकार मुद्राराक्षस का नाटक-तिलचट्टा में नाटक कुंठित परिवार का चरित्र उभर कर आया है । नाटक की नायिका केशी का पति नामर्द है, केशी किसी काले डाक्टर से सम्बन्ध स्थापित करके एक झबरे बाल, थूथन वाले पुत्र को जन्म देती है । इस नाटक में केशी की कुंठा सामाजिक न होकर यौन विकृतियों को जन्म देती है,

~~3==~~

3. नारी स्वातन्त्र्य एवं अस्तित्व की भावना:-

समयानुकूल मानवीय दृष्टिकोण

तथा समाज की वैचारिक धारणा में परिवर्तन का आना शाश्वत है, राजनैतिक सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में होने वाली उथल पुथल, और विज्ञान के क्रान्तिकारी विकास के समाज में एक परिवर्तन की लहर सी आ गयी है। आज आध्यात्मिकता के स्थान पर बौद्धिकता ने अपना स्थान बना लिया है। जीवन पद्धति सेलेकर सोच तक में परिवर्तन का आग्रह दिखायी दे रहा है। नवीन मूल्यों की आग्रह शीलता से जुड़ी एक बड़ी बात यह हुई कि नई पीढ़ी ने शिक्षा प्रसार को सामाजिक विकास के अपरिहार्य माना। अब तक पुरुष वर्ग द्वारा उपेक्षित नारी जिसे समाज में उचित स्थान नहीं मिल पाया था, जागृत की गयी लहर के कारण घर की चहर दीवारी से बाहर निकल आयी। शिक्षा तथा अन्य दूसरे क्षेत्रों में पुरुषों के साथ कदम से कदम मिलाकर प्रगति पर अग्रसर हुई अब यह पुरुषों के आश्रय में तथा उसकी दया पर पड़ने वाली इशारे पर नाचने वाली कठपुतली मात्र न रहकर पुरुष के बराबर चलने लगी।

10. पूर्ववर्ती अध्ययनों में यह स्पष्ट किया जा चुका है, कि उन्नीसवी एवं बीसवीं शताब्दी में सांस्कृतिक एवं धार्मिक आन्दोलनों द्वारा नारी के नये व्यक्तित्व को उभारा गया है। उसे अनेक कुरीतियों और कुप्रथाओं से मुक्ति प्रदान की गयी। फलत: नारी अपने स्वाभिमान और अस्तित्व के प्रति जागरूक हुई।

भारतीय पुरुष प्रधान समाज में उसे जिन अत्याचारों को विवशतावश सहन करना पड़ता है, आज वह शिक्षित हो आत्म निर्भर बनकर उन अत्याचारों का जवाब माँग रही है। अपने अधिकारों के लिए लड़ रही है। सामयिक नारी अपनी आवर्जनाओं से मुक्त अनेक ढंग से अपना जीवन जीने पर बल दे रही है।

नारी के इन व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के मूल्य तथा स्वतन्त्र दृष्टिकोणों ने पारिवारिक और सामाजिक जीवन उनके मूल्यों आदर्शों तथा मान्यताओं को प्रभावित किया है । अद्यतन समाज में जो मूल्य संक्रमण की भावना-दृष्टिगोचर हो रही है, उसका एक कारण नारी स्वतन्त्रता की भावना है ।

बिना दीवारों के घर की मीना ऐसी ही नारी है, "सादर-आपका" की लज्जावती पति की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता को अधिक महत्व देती है, वह अपने जीवन में शारीरिक व भौतिक सुखों को प्राप्त करना चाहती है । उसके इस भौतिक वादी चिन्तन से समाज में एक नई चेतना आयी है । देवयानी का कहना है कि नाटक में नारी की बदलती मन:स्थितियों, मान्यताओं, का वर्णन किया गया है । देवयानी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता व सैक्स के आधार पर अनेक पुरुषों के सम्पर्क में आती है, उसका सिद्धान्त है, कि " वन स्पल इज नाट इनफ फार द लाइफ टेस्ट मोर, महानगरीय आवास समस्या, यौन प्रवृत्ति, और नारीस्वातन्त्र्य को बढ़ावा मिला है । सुनो सेफाला नाटक भी समाज की पारम्परिक धारणाओं के विरुद्ध सम-सामयिक प्रगतिशील चेतना का विरोध है, यह नाटक प्रतिक्रियावादी और जड़ता पूर्ण स्थितियों से ऊपर उठने की दृष्टि देता है । आपसी समझदारी व्यक्तिगत स्वातन्त्र्य स्व-अस्तित्व की भावना, को लेकर जिन नाटकों की रचना हुई है, और पति-पत्नी के सम्बन्धों में उत्पन्न तनाव तथा प्रेम और यौन जिनका मूल प्रतिपाद्य है ऐसे नाटकों में मोहन राकेश का आधे-अधूरे और गिरिराज किशोर का नरमेध, गोविन्द चातक का अपने-अपने खूंटे, तथा मृदुला गर्ग का एक और अजनबी उल्लेखनीय है ।

4. पारिवारिक सम्बन्धों की स्थिति :-

सम-सामयिक युग में वैयक्तिक

समस्यायें और व्यापक राजनैतिक सन्दर्भ एक साथ अभिव्यक्ति पाते हैं। आज का नाटककार किसी एक बिन्दु पर केन्द्रित न होकर जीवन के खण्ड खण्ड अनुभवों को वाणी देकर सजीवता प्रदान कर रहे हैं। प्राचीन काल में जहाँ माता-पिता, भाई-बहन, चाचा-ताऊ, बहू, देवर तथा अन्य सम्बन्धी सम्मिलित होकर रहते थे। भाई-बहन, भाई-भाभी, भाभी देवर के सम्बन्ध पवित्र माने जाते थे, वहीं पर समकालीन युग में पारिवारिक मधुर एवं पवित्र सम्बन्धों को अमानवीय धरातल पर वर्णित किया जा रहा है। मणिमधुकर के दुलारीबाई नाटक में व्यक्ति और समाज की विडम्बना पूर्ण स्थितियों तथा जड़ता पूर्ण नर-नारी सम्बन्धों का स्वस्थ मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित करने की चेतना की गयी है, स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों की दृष्टि से मणि मधुकर के विचार मात्र शारीरिक सम्बन्धों तक ही सीमित हैं, "रस गन्धर्व" में एक जगह कहा गया है, कि स्त्री जात का कोई भरोसा नहीं, स्त्री जिस घर में रहती है उसी की सम्पत्ति कहलाती है, बुल-बुल सराय में इन सम्बन्धों को एक नवीन और मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया गया है दो भाई अपना संयुक्त पत्नी से परेशान होकर भाग खड़े होते हैं। और जंगल में भागती हुई माँ बेटी को अपनी-अपनी पत्नी बना लेते हैं। विडम्बना यह होती है कि छोटे भाई को बुढ़िया माँ हाथ लगती है, तो बड़े भाई को युवती बेटी।

खेला पोलमपुर में एक सैनिक की विधवा जड़ीया का आश्रय की तलाश में आये और एक नितान्त अजनबी सिपाही समरू से मामूली सी जान पहचान के बाद ही सम्बन्ध स्थापित हो जाता है। सिपाही कहता है, "सुनो मैं मर्द हूँ तुम भरपूर औरत हो हम दोनों अगर तय कर लें, (कुछ रुक कर) मैं तुम पर कभी हाथ नहीं उठाऊँगा और न पराई औरतों के पास जाऊँगा। और औलाद देने में तुम्हें आना-कानी भी नहीं करूँगा। बोलो मेरा साथ

तुम्हें मंजूर है ? 10. मोहन राकेश का नाटक आधे-अधूरे मध्यमवर्गीय परिवार के टूटने की प्रक्रिया को उजागर करते हैं । परन्तु पति-पत्नी भाई-बहन, माता-पिता के सम्बन्धों की आज जो स्थिति है, वह नितान्त शोचनीय है । शंकर शेष का नाटक खजुराहो का शिल्पी, गुरु पत्नी और शिल्पी के अप्राकृतिक सम्बन्धों को कल्पना के माँ-पुत्र के वैसे ही सम्बन्धों की भाँति ग्लोरीफाइंग करके नायक को समस्त सौन्दर्य राशि के जोड़ से मुक्तकरके दिखायागया है ।

पति-पत्नी:-
===========

मानव समाज मे स्त्री-पुरुष ,परिवार के अभिन्न अंग हैं । वैदिक समाज में पुरुषों की भाँति स्त्रियों में भी पूर्ण स्वतन्त्रता थी । हमारे धर्म ग्रन्थों के अनुसार विवाह एक धार्मिक संस्कार है, केवल कामवासना, काम-तुष्टि का साधन ही नहीं, स्वतन्त्रता से पूर्व देश में नारी की दशा अत्यन्त शोचनीय थी, स्वच्छन्द प्रेम और प्राचीन सामाजिक विघटन के प्रति नारी में अंकुरित विद्रोह का चित्रण समकालीन नाटककारों ने किया है ।

डा. लक्ष्मी नारायण लाल का नाटक "यक्ष प्रश्न" में यक्ष महत्वपूर्ण भूमिका में समय का प्रतीक है । युधिष्ठिर के अतिरिक्त चारों पान्डव आज के मनुष्य मात्र हैं, उत्तर युद्ध में द्रौपदा के लिए पान्डवों का सम्बन्ध जहाँ द्वन्द और चिन्तन उत्पन्न करता है, वहीं पति पत्नी के बीच के सम्बन्धों की नई व्याख्या भी प्रस्तुत करता है । इसी प्रकार गिरिराज किशोर कृत हो रहने दो, नाटक में युधिष्ठिर का द्रौपदी के साथ सबकुछ जुए में हार-जाना पति-पत्नी के सम्बन्धों को आधुनिक स्तर पर चर्चा की गयी है । - डा० लक्ष्मी नारायण लाल का मादा कैक्टस नाटक पति पत्नीके सम्बन्धों

की आधुनिक स्तर पर चर्चा की गयी है । डा० लक्ष्मी नारायण लाल का मादा कैक्टस नाटक पति-पत्नी के सम्बन्धों की नई आख्या प्रस्तुत करता है । नाटक का नायक अरविन्द आनन्दा के साथ विवाहबंधन में नहीं बंधना चाहता, वह पति-पत्नी के सम्बन्धों को प्रेम के स्तर से देखता है, और विवाह को व्यर्थ मानता है, वह अपनी प्रेमिका से कहता है " किसी स्त्री पुरुष के सम्बन्ध में व्याह से भी बड़ी कोई चीज होती है । -----व्याह तो महज एक बच्चों का घरौंदा है, और घरौंदा भी ऐसा जो बहुत पुराना हो चला है 11. पति-पत्नी के सम्बन्धों की दृष्टि से मणि मधुकर के विचार मात्र शारीरिक सम्बन्धों तक ही सीमित हैं । उसमें भावुकता, और मनोवैज्ञानिक कुंठा का कोई स्थान नहीं है । बुलबुल सराय में पति-पत्नी के सम्बन्धों को एक नवीन एवं मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया गया है । दो भाई अपनी संयुक्त पत्नी से परेशान होकर भाग खड़े होते हैं । और जंगल में भागती हुई माँ बेटी को अपनी अपनी पत्नी बना लेते हैं विडम्बना यह है कि छोटे भाई को युवती बेटी खेला पोलमपुर में एक सैनिक की विधवा जड़िया का आश्रय की तलाश में आये एक नितान्त अजनबी क सिपाही समरू से मामली सी जान पहचान के बाद ही सम्बन्ध स्थापित हो जाता है सिपाही कहता है " सुनो मैं मर्द हूं, तुम भरपूर औरत हो, हम दोनों अगर तय कर लें मैं तुम पर कभी हाथ नहीं उठाऊँगा और न पराई औरतों के पास जाऊंगा । और तुम्हें औलाद देने में आनाकानी नहीं करूंगा । बोलो मेरे साथ तुम्हें मंजूर है, 12. इसी बात पर वह गहने कपड़े तथा सैर सपाटे के आश्वासन पर गठजोड़ा कर लेती है । इसी के समान्तर नाटक में लक्खी शाह और फूलकुंवर के परम्परागत वैवाहिक सम्बन्ध के विद्रूपता को भी प्रस्तुत किया गया है । पति-पत्नी के सम्बन्ध के माध्यम से व्यक्ति और समाज की त्रासदी को अभिव्यक्त किया गया है ।

---197

(ख) माता-पिता और सन्तान:-

आज हमारे समाज की हर संस्थाओं परिवार का हर पहलू सम्बन्धों के बिना मूल्यहीनता का जीवन जी रही है। उनके बीच प्रेम, दया, श्रद्धा, सहिष्णुता, परोपकार, आदर जैसा कुछ भी नहीं है। समय एवं परिस्थितियों के अनुकूल आज वैयक्तिक स्वतन्त्रता की धूम में उपजे पीढ़ी संघर्ष नारी जागरण, प्रेम एवं यौन सम्बन्धों की अकुलाहट ने आदर्शों एवं सम्बन्धों पर प्रश्नचिन्ह लगा दिये हैं। डा० लाल कृत कलंकी नाटक का मिथिकीय परिधान मूल्य संकट के संशय बोध से जुड़ा है। उसमें सन्तान प्रेम के विघटन अनुभूतियों के द्वन्द्व और पिता-पुत्र की आस्थाओं के टकराव की जीवंत समस्या स्थापित की गयी है। अपने प्रशास-निक स्वार्थों की रक्षा के लिए राजा अकुलक्षेम नवजागरण के प्रतीक पुत्र हेल्प का वध करवा देते हैं। नाटक के आरम्भ में हेल्प अपनी अपनी दुःखद स्थिति का बोधक होता है। पितृ मुझे अपने हाथों से दण्ड देते और तरह-तरह से मुझे डराया जाता, 13. आज हमारे सामने अकुल क्षेम जैसे हजारों लोभी और स्वार्थलोलुप पिता हैं। जिनके दुराचार से शाश्वत रागात्मकता पुत्र स्नेह, त्याग, आदर्श, सेवा और कर्त्तव्य परायणता की चेतना खण्डित हो रही है। इनके हृदय में अविश्वासी पुरुष की भांति वात्सल्य प्रेम का रस रंच मात्र भी प्राप्त नहीं है। पिता-पुत्र के पुरातन सम्बन्धों में अलगाव के कारण वात्सल्य प्रेम की सीमा संकुचित हो गयी है। जिससे आज माता-पिता के बीच पनपने वाले स्नेह एवं सदभावना में भी अन्तर आया है। गिरिराज किशोर कृत नरमेद और राम कुमार वर्मा का मालव कुमार, भोज पुमीन, विसंगतियों के बीच असामान्य प्रकार से घटित सम्बन्धों का बयान करते हैं। आज की भौतिक लालसाओं की तृप्ति निमित्त अभिनियंत्रि

जीवन के अभिलाषी माता-पिता के दिल में सन्तान जनित अमंगलकारी भावना पनप रही है ।

(ग) भाई-बहन तथा अन्य कौटुम्बिक सम्बन्धों की स्थिति:-

समकालीन प्रतीक नाटकों में वात्सल्य प्रेम एवं भाई-बहन सम्बन्धों को अभिधायक विविधियों से जुड़े कई महत्वपूर्ण नाटक हैं, जिनमें समाज के द्वारा स्वीकृत रिश्तों के परम्परागत रूप तथा उसमें परिवर्तन कि दिशा दोनों वर्णित हैं । विनोद रस्तोगी का नाटक वर्फ की मीनार, जीवन मूल्यों की बुनियाद, तथा इसके बीच स्वत्व रक्षा के लिए संघर्ष शील आधुनिक भाई -बहन सम्बन्धों की विडम्बना को उजागर करते हैं । " ज्ञानदेव, अग्निहोत्री कृत माटी जागे रे नाटक में टूटती सत्य आस्था का दर्शन मिलता है '। बनवारी पाप को पुण्य की भावना से परे होकर बहन रजिया के यौन सम्बन्धों की चर्चा करता है, समकालीन प्रतीक नाटकों में यौन नैतिकता को अपनाकर कई नाटकों की रचना हुई है । इनमें सम्बन्धों को शाश्वतता के बीच अवतीर्ण हो रही अश्लीलता विधायक समस्यायें प्रतिफलित हुई हैं। तथा संवेदना के सही स्तर पर परम्परागत भाई-बहन की गरिमा को नकार कर नई मूल्य अस्मिता की आवश्यकता प्रतिपादित की गयी है । " न धर्म न ईमान" नाटक में दिनेश जो रिश्ते में अपने बहन से दया से बिवाह करना चाहता है, के माध्यम से क्रान्तिकारी विचार देखने को मिलते हैं । डा॰ लाल के सूर्यमुख और कलंकी दो पौराणिक तथ्यों पर आधारित नाटक है, प्रथम माँ-पुत्र के वेनुरति और प्रद्युम्न के अप्राकृतिक प्रेम के धर्म सम्मत न होने पर भी निर्वासित प्रद्युम्न द्वारिका का रक्षक बनकर सूर्य के रूप में प्रतिष्ठा पाता है किन्तु संशय ग्रस्त होने के कारण हस्तिनापुर के युद्ध में वह वेनुरति के साथ ही घायल हो जाता है । खजुराहों का शिल्पी नाटक में गुरुपत्नी और

शिल्पी के अप्राकृतिक सम्बन्धों को कलंकी के मां-पुत्र के वैसे ही सम्बन्धों की भांति संसार की समस्त सौन्दर्य राशि के जादू से मुक्त होते दिखाया गया है।

5. स्वच्छंद चेतना तथा टूटते-बनते परिवार:-

जहाँ तक सामाजिक प्रगतिशीलता का प्रश्न है, इस तथ्य को स्वीकार नहीं किया जा सकता, कि समाज के चुक गये विश्वासों और मूल्यों के विरुद्ध उदारवादी स्वच्छंद चेतना का संघर्ष उपयोगी भी था। विधवा विवाह के निमित्त अन्तर्जातीय विवाह एवं प्रेम विवाह का समर्थन और स्वीकृत तथा न सुधर पाने की सीमा तक बिगड़े हुए दाम्पत्य रिश्ते में सम्बन्ध बिच्छेद और तलाक का अनुमोदन और पुनर्विवाह की तैयारी आदि नये मूल्य चेतना से जुड़े ऐसे तथ्य जो समाज की उन्नति के लिए अनिवार्य थे। इससे समाज में नये रक्त का प्रचार हुआ परन्तु दूसरी ओर यह स्वच्छंद भाव मोर स्वेच्छाचारिता के रूप में प्रदर्शित हुआ। पाश्चात्य जीवन से प्रभावित, भोग की उद्दाम लालसा तथा भारत की नई पीढ़ी के द्वारा उसके अनुकरण की जाने की अपेक्षा से विभिन्न स्वच्छंद प्रवृत्तियों ने जन्म लिया। जिसका सामाजिक तथा पारिवारिक जीवन पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा। तथा नैतिकता के सामाजिक प्रतिबन्ध ढीले पड़ गये। वस्तुत: यहाँ भी पाश्चात्य स्वेच्छाचारिता का अभिनव संस्करण प्रतिभूत हुआ। पहले प्रेम और यौन की सामाजिक मान्यता पति-पत्नी के सम्बन्धों तक सीमित थी। नई प्रगतिशील समझ और चिन्तन के प्रथम चरण में प्रेम के व्यापक धरातल पर प्रतिष्ठा के कारण विवाह पूर्व प्रेम को ~~सम्बन्ध~~ मान्यता मिली। नैतिक दृष्टि से उस प्रेम की परिणिति विवाह के रूप में मानी गयी। और परिणामस्वरूप विवाहित स्त्री पुरुष का परायी स्त्री

—200

पुरुषों से प्रेम और यौन सम्बन्ध तथा विधुर विधवा और परित्यक्ता नारियों में स्वच्छंद काम की प्रवृत्ति खुलकर व्यक्त हुई । धीरे धीरे अनियंत्रित होती भोगेच्छा तथा अवैध काम सम्बन्ध के कारण समाज में भीतर ही भीतर अनेक कामजनित विकृतियाँ जन्म लेने लगी । नारी यहाँ एक हद तक पुरुष की दासता से मुक्त होकर अपनी अस्मिता पहचान को एक नया सन्दर्भ दिया असंयमित यौन तृष्णाओं के कारण पारिवारिक सम्बन्धों में तनाव विघटन टूटन तथा नैतिक मर्यादा में भारी गिरावट आयी । डा० लक्ष्मी नारायण लाल का नाटक सूर्यमुख में कृष्ण पुत्र प्रद्युम्न और उसकी विमाता वेनुरति के प्रेम,प्रसंग के माध्यम से लेखक ने प्रेम की नैतिकता को लेकर प्रश्न उठाया है । इसके साथ साथ सूर्यमुख में कुछ ऐसे प्रसंगों की अवतारणा हुई है जो स्वच्छंदता के प्रभाव के कारण शारीरिक भोग के स्तर पर यौन कुंठा और काम सम्बन्धों को कुरेदते हैं । पीली दोपहर के 27 वर्षीय नायक सुधांशु की पत्नी रेखा तपेदिक से पीड़ित है, सुधांशु रेखा को सेनी टोरियम में दाखिल कराने जाता है । सेनी टोरियम में उसका सम्पर्क मिसकामता सूर्य नामक नर्स से होता है । नर्स उसके प्रति आकर्षित होती है, उसके मन में सुधांशु के प्रति प्रेम का बीज अंकुरित हो उठता है । नर्स के प्रति यौनाकर्षण का भाव रह रहकर सुधांशु के मन में सुलगता है । लेकिन पत्नी के प्रति उसका एकांतिक समर्पण और गहरा प्रेम उसे नर्स को अपनाने से रोकते हैं । "सुनो सेफाली नाटक समाज की परम्परिक रूढ़ि धारणाओं के विरूद्ध सम सामयिक प्रगतिशील चेतना का विद्रोह है । आपसी समझदारी के अभाव में अथवा मनोवैज्ञानिक आर्थिक आदि कारणों से मूल्यसम्बन्धी परिवर्तित दृष्टिकोण के फलस्वरूप पति-पत्नी के सम्बन्धों में उत्पन्न तनाव प्रेम और यौन की समस्या को लेकर जिन नाटकों की रचना हुई है, उनमें मोहन राकेश का आधे-अधूरे गिरिराज किशोर का नरमेद, गोविन्द चातक का अपने अपने खुरे तथा मृदुला गर्ग का एक और अजनबी आदि नाटक प्रमुख हैं ।

---201

6. विवाह तथा अन्य संस्कारों के प्रति नये चिन्तन:-

स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात प्रगतिशील विचारों के प्रादुर्भाव के फलस्वरूप प्रचलित विवाह तथा अन्य संस्कारों के प्रति क्रान्तिकारी मान्यताओं की सर्जना हुई है। महानगरों में प्रेम विवाह, विधवा विवाह, पुनर्विवाह, विलम्बित विवाह, आदि की संख्या बढ़ती जा रही है। सुरेन्द्र वर्मा ने "सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक नाटक में एक ब्याहता स्त्री की कामकुंठा और मनोवेदना द्वारा पुनर्विवाह की समस्या को झलकाया है। रमेश बक्षी ने देवयानी का कहना है, कि नाटक में एक ऐसी आधुनिक स्त्री की जिन्दगी प्रस्तुत की है, जो वेदवाक्यों, आर्शवचनों तथा पति-पत्नी के बताये गये रिश्तों पर चलने के बजाय सेक्स की सही स्थिति में सम्बन्धों की मांग करती है, नायिका देवयानी कई पुरूषों के साथ स्वच्छंद जीवन गुजारती हुई विवाह को विवशता मानती है। उसका कहना है कि "शादी केवल एक पास है जिसको हाथ में रखने से, खुले आम घूमने, एक साथ बिस्तर में सोने और दुर्घटना के समय सामाजिक विरोध न होने का सर्टीफिकेट मिल सकता है। 15.

विवाह:-

प्राचीन काल में विवाह एक सामाजिक एवं धार्मिक कृत्य माना जाता रहा है, परिवार का मुखिया अथवा बड़ा सदस्य अथवा ब्राहमण व नाई विवाह तय करता था, परन्तु ज्यों, ज्यों शिक्षा का विकास होता गया, व्यक्ति का चिन्तन बदलने लगा। औधोगिक विकास के कारण व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने लगा, और नये व्यक्तियों से सम्बन्ध स्थापित करने लगा इस प्रक्रिया में अनायास ही विवाह के प्रति प्राचीन दृष्टिकोण में बदलाव आने लगा।

समय केअभाव ने भी आज विवाह के स्वरूप मान्यताओं एवं प्रणाली

को प्रभावित किया है ।

आज व्यक्ति गाजे-बाजे से सुसज्जित हो तीन-तीन दिन वधू के घर ठहरने के स्थान पर "कोर्टमैरिज" अथवा रजिस्टर्ड मैरिज करना अधिक उपयुक्त समझता है । कुछ समय पहले विधवा विवाह एक अन्तर्जातीय विवाह को बुरा समझा जाता था, किन्तु शिक्षा व मानवता के आधार पर इस तथ्य को स्वीकार किया जाने लगा है ।

समकालीन परिवारों में विवाह का स्वरूप युगानुरूप बदल रहा है, शिक्षित एवं युवावर्ग अपना जीवन साथी स्वयं माता-पिता एवं परिवार के अन्य सदस्यों का हस्तक्षेप स्वीकार्य नहीं है । शिक्षा के साथ-साथ आर्थिक आत्म निर्भरता ने नारी को स्वच्छंदता प्रदान की है । जिसमें विवाह को व्यक्तिगत सिद्ध कर दिया है । "पीली दोपहर" नाटक में नर्स मीना अपनी सहकर्मी मि० सूद से कहती है, " अब हम तो हो चुके हैं, बेइलाज डार्लिंग । मेरे डैडी ने तो इजाजत दे दी है, कि मेरी तरफ से कुयें में गिर या मर, तो मैं तो अगले महीने में रणजीत से मैरिज कर रही हूं, 16• राधाकृष्ण सहाय कृत अतः किम् नाटक में मनोहर अपनी पत्नी रत्ना से कहता है, सारे खानदान को जुटाकर सबकी खातिरदारी में आधी शक्ति और पैसे का अपव्यय होगा । कहां की बुद्धिमानी है, हमें बाहर वालों से भी तो सीखना चाहिए कुछ । देखो विदेशों में अंगूठी की अदला बदली कर ली बस किस्सा खत्म 17• न धर्म न ईमान नाटक में दिनेश जो रिश्ते में अपनी बहन दया से विवाह करना चाहता है, के माध्यम से क्रान्तिकारी विचार देखने को मिलते हैं ।

फिर अपनी ही जाति और अपने ही धर्म में शादी करने को क्या कहते हैं?क्यों नहीं कहते , दूसरी जातों, दूसरे धर्मों और दूसरी नस्लों में शादी करने को ? ताकि खून ज्यादा से ज्यादा बच सकें नस्ल अच्छी से अच्छी

बन सके ।8· भारतीय समाज में विवाह नैतिकता व आदर्श के रूप में स्वीकारा जाता रहा है । परन्तु आज युग ने इसे नकार दिया है ।

" टगर की नायिका "टगर" ठाकुर के साथ विधिवत विवाह नहीं करती फिर भी हृदय की भावना के आधार पर विवाहितों का सा जीवन व्यतीत करती है " माना कि अभी हमारा बाकायदा विवाह नहीं हुआ और टगर अभी भी मेरी सेक्रेटरी ही है लेकिन हृदय का मिलन तो पूर्ण हो चुका है, और विवाह क्या है? दो हृदयों का मिलन, वह नही है तो सप्तपदी भी व्यर्थ है । ।9·कुत्ते नाटक में भी इसी धारणा की पुष्टि की गयी है, कपूर भौतिक चेतना से प्रभावित होकर अर्थ व काम को प्रमुखता प्रदान करता है, " यह भी कोई बात है कि जिससे शादी हुई, बस उसी से बँधे रह गये ------समय समय के साथ सब कुछ बदलते रहना चाहिए ।

भौतिक वादी युग में विवाह धार्मिक सामाजिक कृत्य न रहकर यौन तुष्टि का मार्ग बन गया है जन्म जन्मान्तर के मिलन और दो आत्माओं के पवित्र संयोग जैसे बातें शारीरिक सुख प्राप्ति के आगे अस्तित्व हीन होती जा रही है । युवापीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता की अन्धानुकरण प्रवृत्ति केकारण विवाह को बेकार का व्यवसाय और बंधन समझ नकार रही है, शादी- डैम विद दिस शादी बिजनेस, क्यों बंधे हम जब वैसे ही एक दूसरे को आसानी से पा सकते हैं । 20· बुद्धिवादी समाज में प्रेम और यौन के न्यूरेटिक रूप के प्रचलन के कारण विवाह को एक विवशता और फैशन के रूप में देखा जाने लगा है । दहेज प्रथा और तलाक प्रथा के अविर्भाव के कारण नई मूल्य चेतना का विकास इन नाटकों में देखने को मिलता है। "रेत की दीवार"नाटक की नायिका रेखा कहती है, "मैं शादी व्याह के चक्कर में ही नहीं पड़ना चाहती, विवाह की वेदी पर स्वतन्त्रता की बलि चढ़ानी पड़ती है, आज कल धर्म, नैतिकता, आदर्श , संस्कार रीति नीति जैसी रूढ़ियां छोटी पड़ गयी है । सांस्कृतिक गतिरोध और

नैतिक मूल्यों के विघटन से आज विवाह सम्बन्धी सनातन आस्थाओं तथा प्राचीन मान्यताओं को नकारा जा रहा है। वैज्ञानिक दृष्टि से प्रेम और यौन को पाप पुण्य तथा उचित अनुचित की धारा से मुक्ति दिला दी है। आज प्रेम के व्यावहारिक जीवन में सेक्स चरित्र एवं सम्बन्ध तीनों पृथक सामाजिक चीजे हैं। रमेश बक्षी विरचित समाचार में सेक्स तथा चरित्र के नये आयामों की चर्चा हुई है। सुशील कुमार का नाटक "चार यारों की यार नये सम्बन्धों की हिमायत करता है। इस नाटक की नायिका विदिया सेक्सुअल अर्ज से पीड़ित है। परिणामस्वरूप वह फिलिस्टीनी पीढ़ी प्रदत्त यौन पर थोपी गयी नैतिकता और आदर्शों को तोड़कर चार पुरुषों के साथ सहवास की भूमिका निभाती है, इसी प्रकार घरौंदा नाटक की नायिका आनन्दा आधुनिक उच्च शिक्षा प्राप्त नारी है जो एक महाविद्यालय में लेक्चरर और कुशल चित्र कर्मी है, अपने प्रेमी अरविन्द के समान वह भी सामाजिक मान्यताओं, विवाह आदि संस्कारों को बच्चों का घरौंदा मानती है। वह नई मान्यताओं का प्रतिपादन अरविन्द के सामान आजीवन रहकर करना चाहती है। डा० लालकृत करर्फ्यू नाटक की नायिका मनीषा विवाह आदि सामाजिक संस्कारों का उल्लंघन करके सामाजिक कर्फ्यू में पुलिस के हाथ पकड़कर अपनेऊपर सामूहिक बलात्कार झेलती है, और पुनः गौतम के पास लौटकर कहती है "जागो आँखे खोलो" मेरे साथ मनमानी करो, मैं कुछ नहीं करूंगी भागूगी भी नहीं, भागना आसान नहीं, भागकर कोई जायेगा कहा ? सब जगह यही कुछ है 21. मणि मधुकर के खेला पोलमपुर में विवाह प्रणाली के बदलते स्वरूप एवंमान्यताओं का वर्णन किया गया है। नाटक में विधवा स्त्री जड़िया नितान्त अपरिचित सैनिक से मामूली सी जान पहचान में वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लेती है, सिपाही कहता है, सुनो " मैं मर्द हूं, तुम भरपूर औरत हो, हम दोनों अगर तय कर लें, (कुछ रूक कर) मैं तुम पर कभी (हाथ नहीं उठाऊंगा न पराई औरतों के पास जाऊंगा और तुम्हें औलाद देने में भी आनाकानी नहीं

करूंगा । बोलो मेरा साथ तुम्हें मन्जूर है, 22. और जड़िया गहने कपड़े और सैर सपाटे के लालच में तुरन्त उससे गठबन्धन कर "सिगड़ी" के चारो ओर फेरा लगा लेती है । इस प्रकार विवाह के बदलते स्वरूप व मान्यताओं पर प्रकाश पड़ा है " जब मन्दिर में जाकर पटेड़िया और शकुन्तला जैसे लोग माला बदलकर पति-पत्नी बनने लगे है, विवाह नामकी संस्थायें मर चुकी है, 23. अतः स्पष्ट है, कि नैतिक मूल्यों के विघटन और स्वच्छंद यौन भावना ने विवाह संस्था को प्रभावित किया है । सुनो शेफाली नाटक की हरिजन युवती शेफाली वैवाहिक रूढ़ परम्पराओं के प्रति विद्रोह करती है वह ब्राह्मण युवक के साथ विवाह विवाह पूर्व सम्बन्ध स्थापित करती है, परन्तु बाद में अपने स्वाभिमान का पलड़ा भारी होने से वह विवाह नहीं कर पाती ।

7. जातीय व्यवस्था से सामाजिक जीवन पर प्रभाव:-

औद्योगिक तथा वैज्ञानिक विकास के कारण आजजातीयता के प्रति फिर से चिन्तन किया जा रहा है । कुछ समय पहले जाति व्यवस्था का कठोरता से निर्वाह किया जाता था समाज ऊंच नीच, सवर्ण एवं अछूत आदि वर्णों में विभक्त होने के कारण कई बुराईयों से जकड़ गया था । उच्च वर्ग निम्न वर्ग को स्पर्श करना दूर उनकी परछाईं सेभी दूर भाग रहा था । किन्तु संविधान तथा शिक्षा से उत्पन्न नवीन दृष्टिकोणों से अभिप्रेरित व्यक्ति छुआछूत को सामाजिक उन्नति एवं विकास में बाधक मान उसे दूर करने का प्रयास करने लगा । आधुनिक परिवेश में शहर से गांव तक जातीयता की भावना कम होती जा रही है । सभी वर्णपरस्पर कार्यकर रहे हैं । रेल, बस आदि यातायात से अस्पृश्यता धूमिल होती जा रही है । दूसरी तरफ संविधान तथा नई शिक्षा नीति ने निम्न वर्ग को अपने अधिकारों व अस्तित्व के प्रति जागरूक किया, तथा सरकार की आरक्षण नीति ने निम्न वर्ग के उत्थान में पर्याप्त सहयोग दिया ।

डा॰ कुसुम कुमार कृत सुनो शेफाली में शेफाली का परिवर्तित दृष्टिकोण समस्त शिक्षित अछूत वर्ग का उदघोष बनकर उभरा है। शेफाली स्वअस्तित्व की रक्षा केलिए अपने प्रेम को त्याग देती है। वह टूट जाना पसन्द करती है। किन्तु झुकना नहीं 24. दरिन्दे नाटक में मनुष्य की जिन्दगी जानवरों सेबदतर हो कर लेखक ने व्यंग्य रूप में उभारा है। जानवरों के लिए अच्छे और सस्ते मकान बनाये जाय, उन्हें पहननेके लिए कपड़े दियेजायें, भोजन की पर्याप्त व्यवस्था हो। 25. और बराबरी का दर्जा पाने का अधिकारी निम्न वर्ग अपने संघर्ष को इन शब्दों के कहता है, "बराबरी केलिएहमारा संघर्ष जारी रहेगा 26. रेवती सरन शर्मा कृत नाटक "अंधेरे का बेटा" में नाटक कार ने जातिगत भेदभाव को नकारनेका प्रयास किया गया है, शिक्षित वर्ग के प्रतिनिधि सन्तोष और उसका पति कैप्टन आनन्द सिपाही खान की विधवा पत्नी शबनम को अपने सागघर के सदस्य की भांति रखते हैं, आज व्यक्ति जाति के नाम पर बंटवारा करने को बुलन्द कर रहा है। मणिमधुकर "इकतारे की आँख में"कबीर द्वारा इसे स्पष्ट करते हुए कहा है, "अगर कोई आदमी है, आदमियत का रास्ता ही जानता होगा, उसे अलग से नाम देना उसका बंटवारा करना, कतई गलत है। 27. विनोद रस्तोगी के "नये हाथ" में महेन्द्र पाल स्पष्ट रूप सेकहता है "मैं ऊंच नीच जाति पांति में विश्वास नहीं करता, मेरे लिए सब मनुष्य समान है 28. रोटीऔर बेटी नाटकमें नाटक कार रमेश मेहता सांस्कृतिक के युग में कर्मयोग, सिद्धान्त, में आस्था व्यक्त करतेहुए नाटक के पात्र के माध्यम सेकहते हैं " अगर जात और कर्तव्य हमारे धर्म की बुनियाद है आधुनिक परिवेश में बदलते बोध से जाति पांति की दीवारे ढीली हुई है। व्यक्ति मानव समानता तथा अस्तित्व बोध तथा भाई चारे के मूल्यों को बौद्धिक स्तर पर स्वीकार कर रहा है।

डा॰ लाल कृत "राम की लड़ाई" में राम गुलाम के माध्यम से

निम्न जाति में बढ़ते आत्म विश्वास जागरूकता तथा साहस को अभिव्यक्त किया गया है रामगुलाम निम्न जाति का युवक है, जो विमलानाम की ब्राह्मण पुत्री से विवाह रचा लेता है । दोनों जात पात के बंधन को तोड़कर मानवता का सन्देश देते हैं समाज में आज इस तरह के वैवाहिक सम्बन्धों को अनुमोदित करते हुए कहता है, कि 〈 यह सम्बन्ध जाति बिरादरी से ऊपरका है, यह दैवी सम्बन्ध है, 20• भूमि की ओर कपास के फूल आदि अन्य नाटकों में जातीय एकता को उभारा गया है ।

समकालीन परिवेश में बढ़ते हुए पाश्चात्य प्रभाव ने भी जातीयता की अवधारणाओं पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है, स्वच्छंद यौन प्रवृत्ति तथा उन्मुक्त प्रेम की प्रवृत्ति ने इस दिशा में मुख्य कार्य किया है । सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक नाटक में विद्र राज पुरोहित दासी के साथ शारीरिक सम्बन्ध रखता है, वह कामवृत्ति के आधार पर जातीयता को महत्व नहीं देता 30• "वाह रे इन्सान" नाटक का कान्ति जो निम्न वर्ग का प्रतीक है, उच्च वर्ग के प्रतिनिधि धनपती से टक्कर लेता है, इसी प्रकार पहला राजा नाटक में निम्न जाति का कवष जातीयता की बदलती हुई मान्यताओं तथा निम्न वर्ग में पनप रही वैयक्तिक चेतना का प्रतीक है, जो अपने ज्ञान पौरुष वतर्क के द्वारा आर्य वर्ग का दम्भ भरने वाले ऋषि मुनियों तथा अपने सखा पृथु के अभिमान को परास्त कर देता है 31• इसी प्रकार सत्य प्रकाश सागर कृत "दीप से जले दीप" नाटक गांधीवादी सिद्धान्त के आधार पर सामाजिक सन्दर्भों, छुआछूत ऊँच नीच, को नकारकर वर्ण व्यवस्था की नई सीमाओं को उद्घाटित करता है । जातीयता के भेदभाव राष्ट्रीयता में अवरोधक सिद्ध हुए हैं । इसी लिए सरकार ने कानून तथा आरक्षण पद्धति द्वारा निम्न वर्ग को ऊपरउठाने के प्रयास किये, और इसका उज्जवल परिणाम भी निकला । आधुनिक परिवेश में निम्न वर्ग अधिकाधिक जागरूक होता जा रहा है ।

दरिन्दे नाटक में निम्न वर्ग के प्रतीक जैन भालू, लोमड़ी, अपने अधिकारों में संघर्षरत है । राजेन्द्रशर्मा की अपनी कमाई, भगवती चरण वर्मा की रूपया तुम्हें खा गया, रेवती सरन शर्मा, की चिराग की लौ, आदि नाटकों में वर्ग संघर्ष सेकुंठित मनोवृत्तियों का चित्रण मिलता है । चिराग की लौ, की नायिका तारा अपने पति की ईमानदारी से असन्तुष्ट है । वह उच्च वर्ग की रानी के समान साड़ियाँ गलीचों तथा उपहारों को प्राप्त करना चाहती है ।

तारा (विद्रोह के स्वर में) हाँ मुझसे अब तरह तरह कर नहीं जिया जाता मुझे तुम्हारे ख्याल नहीं चाहिए । आदर्श नहीं चाहिए मुझे जीवन चाहिए । जो आराम रूपये और रोशन के लिए तरसते-तरसते ऐसा बेरंग वे-रूप न हो जाये जैसे मैं 32. इसी प्रकार रात रानी चाय पार्टियाँ, आला अफसर, आदि अन्य अनेक नाटक में भौतिकता से संघर्षरत कुंठित तनावग्रस्त व्यक्ति का चित्रण किया गया है ।

8. टूटते सामाजिक रीति-रिवाज:-
==============================

समकालीन प्रतीक नाटकों में युगानुकूल पारिवारिक अन्तर्विरोध, तनाव, कलह, और यातना के विभय दृश्य अंकित हुए हैं। इसकेमाध्यम से मानव मूल्यों का प्रवाह प्रतिफलित हुआ है । मोहन राकेश का नाटक आधे अधूरे में जहाँ पति पत्नी के सम्बन्धों की घुटन तथा बिखराव केद्वारा सनातन भारतीय परिवार के उन्मूलन की झाँकी प्रस्तुत की गयी है । यह नाटक आज के विसंगत नगरीय परिवेश के बीच परिवर्तित परम्परा का बोध देता है । सुरेन्द्र वर्मा ने "द्रौपदी" में पौराणिक प्रतीक के व्याज से वर्तमान, वैयक्तिक एवंपारिवारिक असदभावना को उजागर किया है । मुद्राराक्षस ने योसिफिथ पुली नाटक में स्त्री पुरुष के बीच फैली यौन असंगति की अस्मिता द्वारा नयेपारिवारिक मूल्यों की छवि उतारी है । पारिवारिक

जीवन का मूल आधार दाम्पत्य जीवन वात्सल्य प्रेम तथा भाई-बहन, सम्बन्धों की अभिव्यापक वृत्तियाँ हैं । सामाजिक जीवन की गतिविधियों के अवलोकन में नाट्य लेखकों ने मानव मूल्यों उसकी रुचि, आकांक्षाओं रीति, रिवाज, प्रथाओं परम्पराओं, आदि के प्रति स्वस्थ जीवन का परिचय दिया है वर्ण व्यवस्था सीमायें, षोडश संस्कार, विवाह आदि प्रेम एवं यौन नूतन सन्दर्भों की अकुलाहट नारी-जागरण, पीढ़ी संघर्ष, जैसी मान्यतायें विचारणीय है पहलू रहे हैं । भारतीय समाज में रहन सहन खान, पान, विवाहकर्म आदि को लेकर भी महत्त्व पूर्ण धारणायें रही है, पर वर्तमान समय में उच्च शिक्षा पाश्चात्य प्रभाव एवं शहरी करण के फलस्वरूप उक्त आस्थाओं में पर्याप्त अन्तर आया है विनोद रस्तोगी का नाटक नये हाथ में नयेमूल्यों का समर्थन मिलता है । इसमें खान पान, रीति-रिवाज, प्रेम विवाह, आदि के युगानुकूल आदर्शों का निर्माण नये हाथों में सौंपा गया है । रमेश मेहता के रोटी और बेटी नाटक में अन्तरजातीय विवाह के मूल्यों को प्रधानता दी गयी है । इसमें दिखाया गया है कि प्राचीन हिन्दू समाज वैवाहिक प्रश्न के साथ-साथ जाति बन्धन तथा धार्मिक अनुष्ठान के सम्बन्धों में बंधे थे । परन्तुआज नई पीढ़ी जन्म जन्मान्तरोंकि सम्बन्ध तथा आदर्शों को छोड़कर अन्तर्जातीय संस्कारों की ओर उन्मुख हो रही है । प्राचीन काल में ईश्वर , धर्म, नैतिकता सदाचार, स्वर्ग, नरक, पाप पुण्य, कीबाते समाज की आधार शिलाथी । परन्तु वैज्ञानिक प्रभाव के कारण आजइसे नकारा जा रहा है । भीष्म साहनी कृत नाटक कबिरा खड़ा बजार में पुरातन-अधुनातन के बीच है घातक शाश्वत स्थापनाओं के सरोकार से भरा नाटक है गिरिराज किशोर कृत घास और घोड़ा ढहती जीवन व्यवस्था, सनातन रिश्तों के बदलाव, तथा संस्कारों की समस्या को पीठिका देता है । कुछ नाटकों में जीवन मरण, सत्य असत्य, न्याय अन्याय, को लेकर भी शाश्वत मूल्यों की समस्या को अभिव्यक्ति देता है ।

---210

यही कारण है कि मूल्यों की दिशाहीनता और जड़ता हमारी सांस्कृतिक आस्थाओं मेंपरिवर्तन हो गयी है हमारे परम्परित मूल्य टूट रहे हैं, पारिवारिक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, रहन-सहन एवं गठन में विकृति तथा उलझाव व्याप्त हो गयाहै, धर्म के प्रति परिवर्तित दृष्टिकोण का अभिव्यक्त नये नाटकों के सांस्कृतिक सन्दर्भों की व्याख्या प्रस्तुत करती है। कुसुम कुमार का नाटक सुनोसेफाला अपना तथ्यगत नवीनता में आधुनिक धार्मिक ढोंग इसकी आड़ में पनपने वाला भ्रष्टाचार और कुत्सित की चिन्त्य हालत पर प्रकाश डालता है। जिससे विदित है कि नई पीढ़ी प्राचीन पृष्ठभूमि में स्वयं नरक, तीर्थ, व्रत, नीच, छुआ छूत आदि की भावना को हेय दृष्टि से देखनेलगी है।

पीली दोपहर नाटक में गढ़े तावीज पण्डा पुजारियों के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करतेहुए कहता है --------उन पाखण्डियों के गन्दे तावीजों से रेखा अच्छी नहीं होगी, उन दरगाह के टुकड़े, खोरो के पास इसे भेजने से तो कुयें में ढकेलना इसे बेहतर समझता हूं। दरगाह के लफंगे पीरों को मैं खूब जानता हूं। 35. समकालीन व्यथित अन्ध विश्वास,कुरीतियों, रूढ़ियों, मन्दिरों, तथा तीर्थस्थानों, में व्याप्त भ्रष्टाचार के प्रति जन साधारण सचेत हो गया है। आज भूत, प्रेत, जादू, टोना, आदि कुरीतियों की भर्त्सना करके उन्हें समाज से दूर करना अनिवार्य होगया है।

राजेन्द्र शर्मा कृत "कायाकल्प" नाटक में पन्डितों, पुजारियों, तथा अन्धविश्वासों को प्रश्रय देने वाले धर्म के ठेकेदारों पर व्यंग्य किया गया है साथ ही उनकी स्वार्थ वृत्ति पर कुठाराघात किया गया है। इसी प्रकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने बकरी नाटक के माध्यम से अशिक्षित, धर्मभीरू, अन्धविश्वासी, ग्रामीण जनता को पाखण्डियों के ~~अत्याचार~~ अत्याचार के विरुद्ध सचेत करने का प्रयास किया गया है। रेवती सरन शर्मा के दीप शिखा नाटक में हिन्दू मुस्लिम धर्म की कुरीतियों पर कुठाराघात किया है और परस्पर एकता

स्थापित करने पर बल दिया गया है । पाश्चात्य चिन्तन एवं सभ्यता से प्रभावित नाटकों में इस प्रकार के अभूतपूर्व दृश्य देखने को मिलते हैं ।

उत्तर उर्वशी, देवयानी कहा का कहना है, कि व्यभिचार, सुनो शेफाली, तेन्दुआ, व्यक्तिगत, सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, चार यारों की यार, आदि नाटक हैं, जिनमें सामाजिक मर्यादाओं एवं नैतिक मान्यताओं को बंधन समझकर तोड़ा मरोड़ा गया है । भारतीय संस्कार, विवाह, प्रणाली, और आदर्श महज ढकोसला मात्र माने जाने लगे हैं । देवयानी तो विवाह को केवल यौन तुष्टि हेतु सामाजिक पास मानती है, 34. वह सामाजिक रीति रिवाजों नैतिकताओं, को वौद्धिकता के धरातल पर नकारती है, सुरेन्द्रवर्मा कृत सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक की नायिका शीलवती भौतिक चेतना के आधार पर दाम्पत्य जीवन उसकी मर्यादा, सामाजिक लोकाचार, शिष्टाचार आदि को शारीरिक कामवासना के आधार पर नकारती है । शीलवती वैवाहिक मर्यादा के साथ-साथ मातृत्व की मान्यता को भी गौण उत्पादन कहकर उपेक्षा करती है ।

इस प्रकार आधे-अधूरे नाटक में भी नाते-रिश्ते एवं सम्बन्धों की परम्परा को नकारा गया है । दरिन्दे नाटक में रति कहते हैं " तुम कुलवधू हो सकती है, मैं उन स्त्रियों में नहीं हूं जो अपने शरीर को फीडिंग बाटल बना देती हैं । "मि. कपूर --------अब पुरानी परम्परायें टूटनी चाहिए यह भी कोई बात है, जिससे शादी हुए बस उसी से बंधे रह गये । ---समय के साथ साथ सब कुछ बदलते रहना चाहिए । 36. मि. कपूर कहता है " ------ मानव मूल्य घिसे हुए सिक्के जो अब नहीं चलते, 37. छोटे सैयद बड़े सैयद नाटक में धार्मिक, सामाजिक, कुप्रथाओं, लोकरीतियों आदि पर प्रश्न चिन्ह लगाया गया है । पृथ्वीनाथ कृत माडर्न लाइफ नाटक में उच्च वर्ग में समाज में टूटती रीति-रिवाजों, बिश्वासों आदि का वर्णन किया गया है । नाटक में भारतीय

सभ्यता लोकरीतियाँ आदि को अवैज्ञानिक सिद्ध करके पाश्चात्य सभ्यता और उसकी ड्रिंग्स, डिनर, इसियुक्त संस्कृति अपनाने पर बल दिया गया है। तेंदुआ नाटक भी उच्च वर्ग में तिरोहित होते दया सहानुभूति, प्रेम, जैसे शाश्वत तत्वों की स्थिति का चित्रण करता है।

ओह अमेरिका" नाटक में इंग्लैण्ड से लौटा हुआ श्याम कहता है हमारे इंगलैण्ड में कोई लड़का अपने बाप के पैर नहीं छूता। यह सब कंजर वेटिज्म है। आदमी को वक्त के साथ बदलना चाहिए। किन्तु जब इसकी सन्तान परिचय भी रंग ढंग से ढल जाती है तो उसे बरदास्त नहीं होता समीर अपनी माँ की इज्जत न करते हुए सिगरेट पीता है। 39. इसी प्रकार दरिन्दे में बुढ़िया अपने पुत्र के विषय में कहती है, का9 हे भगवान कइसन अकुस= कलयुग आय गवा है 9 बेटा बाप से सिगरेट माँग के पिये लाग है। हमारा तो कुछ समझ में नहीं आवत 40. तीसरा हाथी नाटक में भी सन्तान द्वारा तानाशाह पिता के प्रति उपेक्षा व्यक्त की गयी है, घरौंदा नाटक केवल एक व्यक्ति के नहीं अपितु समस्त मध्यवर्गीय समाज की बौझ स्वरूप नैतिकता को उदघाटित करता है।

सन्दर्भ सूची

षष्ठ परिच्छेद

1. अतः किम् - राधाकृष्ण सहाय पृष्ठ 72

2. सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक सुरेन्द्र वर्मा पृष्ठ 51

3. " " "

4. कुत्ते- सुरेश चन्द्र शुक्ल पृष्ठ 20

5. न धर्म न ईमान, रेवती शरण शर्मा पृष्ठ 68

6. बिना दीवारों के घर, मन्नू भण्डारी पृष्ठ 60

7. आधे-अधूरे, मोहन राकेश पृष्ठ 31

8. कर्फ्यू : डा. लाल पृष्ठ 83

9. देवयानी का कहना है, रमेश बक्षी, पृष्ठ 72

10. मणिमधुकर: खेलापोलमपुर पृष्ठ 8

11. मादा कैक्टस डा. लाल पृष्ठ 45

12. खेलापोलमपुर : मणिमधुकर

13. डा. लाल: कलंकी पृष्ठ 78

15. रमेश बक्षी: देवयानी का कहना है पृष्ठ 27

16. पीली दोपहर जगदीश चतुर्वेदी पृष्ठ 41

17. अतः किम् " राधाकृष्ण सहाय पृष्ठ 56

18. न धर्म न ईमान, रेवती सरन शर्मा पृष्ठ 6

19. टगर , विष्णु प्रभाकर पृष्ठ 8

20. दरिन्दे- हमीदुल्लाह पृष्ठ 39

21. डा. लाल , कर्फ्यू पृष्ठ 83

22. खेलापोलमपुर मणिमधुकर पृष्ठ 17

23. देवयानी का कहना है- रमेशबक्षी पृष्ठ 55

34. सुनोसेफाली - डा. कुसुम कुमार पृष्ठ 60

25. दरिन्दे-हमीदुल्लाह पृष्ट 23, पृष्ट 42

26. दरिन्दे- " पृष्ट 23

27. इकतारे की आँख, मणिमधुकर पृष्ट94

28. नये हाथ विनोद रस्तोगी पृष्ट 113

29. राम की लड़ाई डा. लक्ष्मी नारायण लाल पृष्ट 34

30. सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक, सुरेन्द्र वर्मा पृष्ट51।

31. पहला राजा, जगदीश चन्द्र माथुर पृष्ट 83-84

32. चिराग की लौ: रेवती शरन शर्मा पृष्ट 32

33. पीली दोपहर, जगदीश चतुर्वेदी पृष्ट 16-17

34. देवयानी का कहना है, रमेश बक्षी पृष्ट 23

35. सूर्य की अन्तिम किरण से सूर्य की पहली किरण पृष्ट 52

36. कुत्ते, सुरेश चन्द्र शुक्ल पृष्ट 20-

37. वही " " पृष्ट 21

38. ओह अमेरिका, दया प्रकाश सिन्हा पृष्ट 81

39. " " " " पृष्ट 95

40. दरिन्दे, हमीदुल्लाह पृष्ट 9